P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

साम्प्रदायिकता का संकट और विमर्श

विकास कुमार मिश्रा
शोधार्थी,
जी.बी. पन्त, समाजिक विज्ञान संस्थान, झूसी, यूनिवर्सिटी, प्रयागराज, यू.पी., भारत

सारांश

सांप्रदायिकता एक ऐसी विचारधारा है जो इस विश्वास पर आधारित है कि भारतीय समाज ऐसे धार्मिक समुदायों में बंटा हुआ है जिसके आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक हित अलग–अलग है और यहां तक कि अपने धार्मिक अंतरों के कारण एक दूसरे के शत्रु है। सांप्रदायिकता सर्वोपरि एक ऐसी विश्वास प्रणाली है जिसके माध्यम से समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीति का अवलोकन और विश्लेषण किया जाता है और उसके इर्द–गिर्द राजनीति को संगठित करने का प्रयास किया जाता है। एक विचारधारा के रूप में सांप्रदायिक विचारधारा और सांप्रदायिक हिंसा के बीच संबंधों को भी स्पष्ट करना आवश्यक है। एक विचारधारा के रूप में सांप्रदायिकता का मूलभूत अर्थ सांप्रदायिक विचारों और चिन्तन शैली का प्रसार करना होता है।

मुख्य शब्द : सांप्रदायिकता, धर्म, राष्ट्र, भाषा।

प्रस्तावना

भारत में धर्म और जाति अस्मिता निर्माण के सबसे प्रमुख तत्व रहे हैं। समकालीन भारत में जब भी धर्म आधारित पहचान की चर्चा की जाती है तो साम्प्रदायिकता उसमें सबसे बड़ा मुद्दा होती है। यहीं पर स्पष्ट कर देना चाहिए कि साम्प्रदायिकता एक औपनिवेशिक निर्मिति है जबकि धर्म विभिन्न समुदायों या संस्कृतियों के दैनिक आचार विचार की एक नैतिक व्यवस्था है। औपनिवेशिक शासन ने भारतीय उपमहाद्वीप के धर्मो को एक दूसरे के हित को समाप्त कर अपने हित को आगे बढ़ाने वाले समुदायों के रूप में एक दूसरे के समक्ष खड़ा कर दिया। 1857 के विद्रोह के बाद इस प्रक्रिया को औपनिवेशिक शासन ने सायास बढ़ाया फलस्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से साम्प्रदायिक दंगों की एक श्रृंखला वर्तमान काल तक चली आयी है। देश किसका है और इसका स्वरूप क्या होगा? क्या यह धर्म आधारित होगा? इसका नाम क्या होगा ? इस बात को लेकर दंगे हुए। हिन्दी राष्ट्रभाषा होगी कि उर्दू या फारसी प्रचलन में होगी इसको लेकर दंगे हुए। संविधान सभा में एक समुदाय विशेष की बड़ी संख्या को भय में बदला गया फिर 1946 में भीषण कत्ले–आम किया गया। भारत और पाकिस्तान बनने के बाद देश में दंगे हुए । देश की राजनीति और शक्ति पर एकाधिकार और देश के स्वरूप को अपनी सुविधानुसार ढालने के लिए 1992 के बाद तो दंगों की एक नयी श्रृंखला ही चल पड़ी। दंगे की आग रह–रह कर भड़क उठती है। इस दौरान कुछ जाने–पहचाने तरीके प्रयोग में आते हैं तो कुछ सर्वथा नये तरीके और प्रतीक उभरते हैं।

साहित्यावलोकन

आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता पर बात करते समय हम गणेश शंकर विद्यार्थी के जीवन को छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकते हैं। विद्यार्थी उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते थे जिसने आधुनिक शिक्षा पायी थी, जो देश के मूल चरित्र को जनतांत्रिक मूल्यों के हिसाब से ढालना चाहती थी। उनका विश्वास था कि प्रेस और जनतंत्र मानव मूल्यों को मुक्तिकामी दिशा देंगे और एक सेकुलर समाज का निर्माण हो सकेगा। विद्यार्थी जी ने 1931 में हुए कानपुर में भीषण दंगे में अपनी जान गवाँ दी थी। कानपुर के दंगों ने उस समय के कांग्रेस नेतृत्व को सोचने पर मजबूर किया था। इसकी पड़ताल के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यसमिति ने भगवान दास की अध्यक्षता में छह सदस्यीय समिति का गठन किया था। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट में व्यवस्थित रूप से साम्प्रदायिक दंगों की निर्मिति और प्रसार पर बात की। सम्भवतः पहली बार देश की जनता के समक्ष यह तथ्य लाने का प्रयास किया गया कि साम्प्रदायिकता एक औपनिवेशिक

निर्मिति है।[1] ज्ञान पाण्डेय ने अपनी पुस्तक– *'रिमेम्बरिंग पार्टीशन, वायलेन्स, नेशनलिज्म एण्ड हिस्ट्री इन इण्डिया'* (2004), में यह बताया है कि ऐतिहासिक महत्व से हटकर कैसे उसका स्थानीयकरण कर दिया जाता है और उसको एक अपने समुदाय के इतिहास के रूप में दिखाया जाता है।

ज्ञान पाण्डेय ने इस ओर इंगित किया है कि ऐतिहासिक महत्व से हटकर उसका स्थानीयकरण कैसे होता है तथा बहुसंख्यक के मध्य इसे एक समुदाय के इतिहास के रूप में कैसे प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही राष्ट्रीयता एवं साम्प्रदायिकता का प्रश्न, स्थानीयकरण की प्रक्रिया में कैसे आता है। यहां पर वह स्थानीयकरण की प्रक्रिया के अध्ययन एवं विमर्श की जरूरत पर बल देते हैं। जो कि शोधार्थी को यह जानने के लिए प्रोत्साहित करता है कि साम्प्रदायिक चेतना के निर्माण में स्थानीयकरण की क्या भूमिका है और इसके क्या–क्या तरीके होते हैं। इस ओर अध्ययन के लिए प्रेरित करता है।

विभूति नारायण राय भारतीय पुलिस सेवा के अफसर के रूप में उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में काम करते रहे हैं। 'साम्प्रदायिक दंगे और भारतीय पुलिस' में उन्होंने भारतीय पुलिस की संदिग्ध भूमिका के बारे में लिखा है। बहुसंख्यक समुदाय पुलिस को अपने मित्र के रूप में तथा अल्पसंख्यक अपने शत्रु के रूप में देखता है। उन्होंने यह भी लिखा है कि यदि सरकारे सतर्क रहे तथा ठोस कारवाई करते तो कोई भी दंगा 24 घण्टों से ज्यादा नहीं चल सकता। इस पुस्तक की नवीनता यह है कि यह पुलिस बल को साम्प्रदायिक दंगों के परिप्रेक्ष्य में देखती है और बताती है कि पुलिस कैसे काम करती है। यह पुस्तक दंगों के बारे में राज्य के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है। दंगों को विभूतिराय नारायण राय पुलिस अफसर की दृष्टि से देखते हैं जिसका अनुभव सामान्य अकादमिक जगत में नहीं हो पाता है। इस पुस्तक की सीमा यह है कि साम्प्रदायिकता को यह शहरी समस्या के रूप में देखती है।

आजाद भारत में सांप्रदायिकता का प्रसार नहीं रूका और 1960 के बाद का ऐसा कोई दशक नहीं बचा, जब दंगे न हुए हों। दंगों के बाद इससे बचने के उपायों पर चर्चा हुई और नागर समाज इससे बचने का उपाय खोजता फिरा है। अभय कुमार दुबे की किताब *सेकुलर/साम्प्रदायिकः एक भारतीय उलझन* का ध्येय ऐसे किसी सरलीकृत उपाय सुझाने से बचना है जो साम्प्रदायिकता को औपनिवेशिक निर्मिति बताते हुए अमीर खुसरो, कबीर, दादूदयाल और रसखान के व्यक्तित्व के माध्यम से इस उलझन को सुलझ जाने की बात करे। भारत में साम्प्रदायिक दंगों से निपटने के लिए सिविल सोसाइटी इसे एक फौरी उपाय के तौर पर पेश करती रहती है। उसके पास हिदूं–मुस्लिम सौहार्द्र के नाम पर सुनाने के लिए ढेर सारी कहानियां होती है। कभी–कभार यह भोलापन यहां तक चला जाता है कि यदि कोई गालिब की गजल सुन रहा है तो सेकुलर होगा ही! इसी तर्ज पर किसी मुस्लिम को हनुमान चालीसा पढ़ते या गीता का पाठ करते प्रस्तुत किया जाता है या हिंदू जनों को ताजिया रखते हुए। यह वास्तव में एक फौरी उपाय भर है। इसे रणनीति के रूप में पेश किया जाता है। अभय कुमार दुबे की यह किताब भी किसी ठोस रणनीति को सुझा पाने में नाकाम दिखती है।

सेकुलर/साम्प्रदायिक

एक भारतीय उलझन के आयाम में अभय दूबे ने बताया कि सेकुलरीकरण की आधुनिक परियोजनाओं और साम्प्रदायिकता के संकट पर हुए लेखन का विश्लेषण करती है। भारत में समाज विज्ञानों का विमर्श मुख्यतः विश्वविद्यालयों द्वारा नियंत्रित और अंग्रेजी से प्रभावित रहा है। इस विमर्श को अंग्रेजी भाषा में पढ़े–लिखे प्रोफेसरान ने जन्म दिया, बढ़ाया और अपनी सुविधानुसार कुंद भी किया। इस विमर्श में समाज के सभी हितधारकों को शामिल नहीं किया गया। इस कमजोरी पर यह किताब अंगुली रखती है। पार्थ चटर्जी, सुदीप्त कविराज, टी. एन. मदन और राजीव भार्गव अंग्रेजी भाषा में प्रभावशाली रूप से सेकुलर/साम्प्रदायिक पर विमर्श और सिद्वांत रचना करते रहे हैं। उन्होंने आधुनिकता और जनतंत्र से भारतीय जनों की मुठभेड़ और इससे उनके मोलभाव की सफलता–असफलता का लेखा जोखा प्रस्तुत करने का प्रयास किया। यह आश्चर्यजनक है कि अंग्रेजी भाषा के बरक्श हिंदी में ऐसे सिद्धांतकारों और सोचने वाले जनों का अभाव है जो सेकुलर और साम्प्रदायिक की बाइनेरी पर अपना पक्ष रख सकें। ऐसे में अभय कुमार दुबे राजेंद्र माथुर, किशन पटनायनक, सच्चिदानंद सिन्हा, खगेंद्र ठाकुर, राजेंद्र यादव, प्रभाश जोशी, राजकिशोर और सुधीश पचौरी की ओर देखते हैं। इन विद्वानों ने अखबारों और लेखों के माध्यम से हिंदी की विस्तारित होती दुनिया में अपना पक्ष रखा है। यह पक्ष सुभेद्य भी है। यह एक सीमा से आगे इसलिए नहीं बढ़ पाता है क्योंकि वह अपनी भाषा और मुहावरे अंग्रेजी बौद्धिक संसार से लाता है। वह रूढ़ छवियों को स्थायी छवियों में तब्दील करने का शिकार बन जाता है। यह किताब हमारा ध्यान आकर्षित करती है कि हिंदी का बुद्धिजीवी वर्ग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आलोचना तो करता है लेकिन जब वह मुसलमानों के बारे में लिखता है तो वह मुसलमानों की उस छवि को ही प्रसारित करता है जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचार–वीथिका में दीखती हैं। इस प्रकार यह उन लोगों के लिए एक चेतावनी भी है जो उत्साह में एक निर्देशित विपक्ष में जा बैठते हैं। वे वही करने और कहने लगते हैं जो उनका विरोधी चाहता है। वे विरोधी की आवाज बन जाते हैं। इस विमर्श की एक कमजोरी यह भी है कि यह 1990 के बाद विकसित हुई आर्थिक व्यवस्था और भूमंडलीकरण से धर्म के रिश्ते की शिनाख्त करने में चूक जाता है। यह किताब ध्यान दिलाती है कि पूँजीवाद और विकास के बेरहम हाथों द्वारा बदलती दुनिया के ठोस धरातल पर सेकुलरवाद के संकट की जाँच करना हिंदी जगत के विचारकों की ऐतिहासिक जिम्मेदारी है। फिर भी हिंदी में 'हिंदी सेकुलर' अनुवाद, निरपेक्षता और समभाव की राजनीति से दो–चार होता है। वह सैद्धांतिक पहलुओं की परवाह किए बिना सौंदर्य, व्यंग्य, कटाक्ष, विवाद और तार्किकता से सेकुलरवाद जैसे

सामाजिक–राजनीतिक प्रश्न को सांस्कृतिक चिंतन के जरिये हल करने का प्रयास करता है।

साम्प्रदायिकता का ग्रामीणीकरण या ग्रामीण भारत में साम्प्रदायिकता

यह किताब उस बिडंबना की ओर इशारा करती है जिसमें साम्प्रदायिकता जैसी समस्या को न केवल शहरी समस्या माना गया बल्कि यह शहरी अभिजनों की बौद्धिक बहसों में उलझकर रह गयी। हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में एक सुविधापरक खामोशी बनी रही। इस खामोशी को अब्दुल बिस्मिल्ला अपने उपन्यास अपवित्र आख्यान में तोड़ते हैं। साम्प्रदायिकता अब गाँवों में है। अब वह गाँव के 'पवित्र आख्यान' का हिस्सा है। अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास अपवित्र आख्यान के बहाने यह किताब इस बात की शिनाख्त करती है कि एक पढ़ा–लिखा मुस्लिम मन इस बदले माहौल से किस प्रकार मोलभाव करता है? अब उसी गाँव में हिंदू–मुसलमान सामासिकता की महक के साथ–साथ साम्प्रदायिकता की बास फैल गयी है।

24 दिसंबर 1931 को यंग इंडिया में लिखे अपने एक लेख में महात्मा गांधी इस बात को लेकर खुशी जताते हैं कि भारतीय गाँवों में हिंदू–मुसलमान आज भी नहीं लड़ते और जब देश आजाद हो जाएगा तो शहरों में दंगे बिल्कुल नहीं होंगे।[2] यह 1930 का दशक था जब आजादी की जंग का सामाजिक–धार्मिक आधार काफी व्यापक हो चुका था। 1946 से 1950 के वर्षों ने गांधी को उनकी अपनी ही आंखों के सामने गलत साबित किया। इस दौर में ग्रामीण क्षेत्रों में साम्प्रदायिकता का प्रसार होना शुरू हो गया। वास्तव में गांधी सहित भारत के एक बड़े विद्वत्समूह ने साम्प्रदायिकता को औपनिवेशिक निर्मित माना था और इसमें औपनिवेशिक राज्य को मुख्य दोषी मान लिया। उन्हें लगता था कि औपनिवेशिक राज्य की समाप्ति पर साम्प्रदायिकता समाप्त हो जाएगी। यंग इंडिया के संदर्भित लेख में भी वे ऐसा मानते हैं। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में यह मिथक एक बार फिर टूटा जब 1989 और 1992 में लाखों की संख्या में ग्रामीण नौजवानों ने साम्प्रदायिक गोलबंदियों में भाग लिया। यह किताब बताती है कि किस प्रकार उमा भारती और साध्वी ऋतंभरा के भाषणों के कैसेटों का प्रसार किया गया। इसे एक दूसरी घटना से भी समझ सकते हैं। 2017 के अक्टूबर के पहले सप्ताह में जब देश महात्मा गांधी जयंती मना रहा था तो गोंडा जिले में एक गौकशी हो गयी।[3]

इस गौकशी को अंजाम देने वाले लोग ब्राह्मण थे। एक गांव में घटी इस घटना को इंटरनेट के सहारे फैलाया जाना था, उसके बाद क्या गांव क्या शहर सब साम्प्रदायिकता के चपेट में आ जाते हैं। अभय कुमार दुबे की यह किताब ग्रामीण भारत के कल्पना संसार में सेकुलर/साम्प्रदायिक के बोध से अनजान है। यह नहीं बताती है कि किस प्रकार ग्रामीण मानस को एक खास राजनीतिक उद्देश्य के लिए गोलबंद किया गया।

अकादमिक जगत के साहित्य एवं लेखों के अतिरिक्त शोधार्थी में साम्प्रदायिकता से सम्बन्धित कुछ रिपोर्ट का भी अध्ययन किया है जैसे– PCI.on 8 Feb. 2013, Faizabad Communal Riot was preplanned.

प्रेस काउंसिल ऑफ इण्डिया की एक रिपोर्ट के अध्ययन से पता चलता है कि अक्टूबर 2012 में फैजाबाद में जो दंगा हुआ था वह पूर्व नियोजित था इसमें कट्टरपंथी हिन्दुवादी संगठन शामिल थे। पी.सी.आई. के चेयरमैन जस्टिस मार्कण्डेय काटजू ने 08 फरवरी 2013 को 19 पेज का एक रिपोर्ट जारी किया। इस रिपोर्ट को तैयार करने के लिए वयोवृद्ध पत्रकार शीलता सिंह, (संपादक, फैजाबाद हिन्दी डेली ''जनमोर्चा'') की एक सदस्यीय कमेटी गठित की गयी इस रिपोर्ट में बताया कि इच्छा शक्ति की कमी के चलते दंगों को रोकने में प्रशासन असफल रहा। 1990 के बाद से साम्प्रदायिक दंगे शहरों से गाँव की तरफ रूख कर रहे हैं। इस मानसिकता के अध्ययन के आवश्यकता पर रिपोर्ट ने ध्यान आकर्षित किया है।

शोध का क्षेत्र

शोधार्थी की दिलचस्पी *ग्रामीण उत्तर प्रदेश में साम्प्रदायिक चेतना का प्रसारः फैजाबाद जिले के विशेष संदर्भ में* विषय पर शोध करने की है। शोधार्थी यह जानना चाहता है कि वह कौन–कौन सी वजहें रही है, जिसके चलते ग्रामीण क्षेत्र के जनमानस में साम्प्रदायिकता चेतना का प्रसार होता है। यह साम्प्रदायिकता चेतना ही आगे चलकर समाज में भयंकर साम्प्रदायिक तनाव पैदा करता है। फैजाबाद को चुनने के पीछे प्रमुख कारण यह रहा है कि यह भारत की गंगा–जमुनी तहजीब का एक प्रमुख केन्द्र रहा रहा है। इस जिले में स्थित बाबरी मस्जिद/राम मन्दिर को केन्द्र में रखकर पिछले दो दशकों में लगातार धार्मिक अस्मिता पर जोर दिया गया है। देश के अन्य भागों में साम्प्रदायिक तनावों के पहले या बाद में अयोध्या को एक रूपक के रूप में इस्तेमाल करने का प्रयास किया जाता है। 2012 में फैजाबाद में पुनः इसी प्रकार के प्रयास किए गये। इस प्रकार फैजाबाद को चुनने के पीछे पर्याप्त कारण हो सकते हैं।

आजादी के बाद लेकर अब तक ग्रामीण उत्तर प्रदेश में साम्प्रदायिकता चेतना किस अवस्था में रही है विशेषकर फैजाबाद जिले में यह समस्या किस प्रकार से रही है इसका अध्ययन आवश्यक है। साथ ही साथ इसका अध्ययन करना भी आवश्यक है कि धर्म निरपेक्षता के मूल्य इन क्षेत्रों समुचित ढंग से विकसित न हो पाने का क्या कारण रहे है ? विभिन्न समुदायों की साझी विरासत तथा मानवीय मूल्यों की भावना विकसित होने में क्या दिक्कतें है ?

इसके अतिरिक्त इन क्षेत्रों पर धर्मनिरपेक्ष संस्कृति, मानवीय मूल्यों एवं विभिन्न समूहों को जोड़ने वाली साझी विरासत के निर्माण की क्या–क्या संभावनायें हो सकती है ?

अध्ययन का उद्देश्य

आरम्भिक अवस्था में सांप्रदायिक चेतना इस तरह कार्य करती है कि वह किसी खास घटना के स्तर पर साम्प्रदायिक हिंसा का रूप ले लेती है। साम्प्रदायिक हिंसा आमतौर पर उस समय उभरती है जब पहले से चली आ रही साम्प्रदायिक चिन्तन की तीव्रता एक खास स्तर तक पहुँच जाती है और साम्प्रदायिक भय, सन्देह और नफरत में वृद्धि के कारण वातावरण दूषित हो जाता

है। इसलिए साम्प्रदायिक चेतना बिना हिंसा के भी बनी रह सकती है परन्तु साम्प्रदायिक हिंसा बिना साम्प्रदायिक चेतना या विचारधारा के अस्तित्व में नहीं रह सकती। (चन्द्र, 2000)

साम्प्रदायिक चेतना एक बड़े स्तर पर तथा आरम्भिक एवं बुनियादी स्तर भी काम करता है जबकि साम्प्रदायिक हिंसा मात्र बाहरी लक्षण है। साम्प्रदायिक हिंसा की प्रस्तावना और पूर्वामास (पूर्वाग्रह) के रूप में साम्प्रदायिक चेतना के फैलाने के कार्य को तथा उसकी विचारधारा को आमतौर पर नजर अंदाज किया जाता है, साम्प्रदायिकता का बोध ज्यादातर सिर्फ उसी समय दर्ज किया जाता है जब हिंसा भड़क उठती है। इसलिए साम्प्रदायिक लोग भी मुख्य रूप से साम्प्रदायिक चेतना के प्रसार के कार्य में दिलचस्पी रखते हैं और अनिवार्यतः साम्प्रदायिक हिंसा फैलाने में नहीं। दरअसल जो लोग साम्प्रदायिक हिंसा की प्रेरणा देते है और उसे संगठित करते है उनका मुख्य उद्देश्य व्यापक नरसंहार करना नहीं बल्कि ऐसी स्थिति पैदा करना जो आम जनता का सम्प्रदायीकरण कर दे तथा साम्प्रदायिकता की भावना उनके अंदर चेतना के स्तर पर कार्य करने लगे। (चन्द्र 2000)

इस प्रकार प्रस्तुत इस शोध प्रस्ताव में निम्नलिखित उद्देश्य के साथ अध्ययन किया जाएगा–

1. ग्रामीण क्षेत्रों में साम्प्रदायिक चेतना के प्रसार का अध्ययन करना।
2. यह देखना कि ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के दैनिक व्यवहार में किस रूप में हमारे सामने आती है।
3. यह देखना कि वह कौन–कौन से माध्यम से जिससे साम्प्रदायिक चेतना का प्रसार होता है। तथा साम्प्रदायिकता के नाम पर लोगों को संगठित करने वाले तत्व कौन–कौन से है।
4. यह अध्ययन करना आर्थिक हितों की टकराहट की वजह से साम्प्रदायिक तनाव क्यों और कैसे फैलता है।

इस शोध के माध्यम से शोधार्थी साम्प्रदायिक चेतना के प्रसार की तरीके, साम्प्रदायिकता के नाम पर लोगों को संगठित करने तथा धर्म तथा अन्य तरीको से लोगों को प्रोत्साहित करने के तरीकों के बारे में पता लगाएगा तथा ऐसे लोगों के बारे में भी अध्ययन करेगा जो साम्प्रदायिक चेतना फैलाने या हिंसक रूप देने में शामिल होते हैं इसके पीछे उनके प्रोत्साहन (Motivation) के कारण को ढूँढने का प्रयास होगा तथा ठोस एवं कारगर समाधान ढूँढने का प्रयास करेगा जिससे कि साम्प्रदायिकता की समस्या से निपटा जा सके तथा साम्प्रदायिक चेतना के प्रसार के विरूद्ध साम्प्रदायिक सौहार्द, साझी विरासत की संस्कृति, धर्म निरपेक्षवादी मूल्यों को ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के बीच बेहतर तरीके से प्रचारित करने का काम किया जा सकेगा।

शोध परिकल्पना

1. साम्प्रदायिकता केवल शहरी समस्या नहीं है बल्कि यह ग्रामीण क्षेत्रों में फैल रही है।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में धार्मिक क्रियाकलापों का स्वरूप बदलकर साम्प्रदायिकता चेतना का प्रसार किया जाता है।

शोध प्रश्न

1. ग्रामीण क्षेत्रों में साम्प्रदायिक चेतना का प्रसार किस प्रकार से होता है ?
2. ग्रामीण क्षेत्रों में, दैनिक जीवन में लोगों के मन में साम्प्रदायिक भावना कैसे पनपती है?

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में चुने गये शहर, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों को शामिल किया गया है। इस अध्ययन में प्रस्तुत शीर्षक से सम्बन्धित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, सरकारी दस्तावेजों, सरकारी अध्ययनों, सरकारी सर्वेक्षणों से प्राप्त आकड़ों, शोधप्रबन्धों का अध्ययन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया जाएगा। शोधार्थी फैजाबाद जिले के अन्दर तीन ऐसे गाँवों का चुनाव करेगा जिसमें–

1. ऐसा गाँव जहाँ पर दोनों समुदाय के लोग शांतिपूर्वक रह रहे है। आपसी मेल जोल की स्थिति ठीक है। साम्प्रदायिक तनाव जैसी स्थिति नहीं है।
2. ऐसा गाँव जहाँ पर संक्रमण कालीन स्थिति है साम्प्रदायिक चेतना फैलाने वाले संगठन सक्रिय है लेकिन साम्प्रदायिक हिंसा जैसी घटना नहीं हुई है।

इसके अतिरिक्त इस अध्ययन में भागीदारी आधारित पर्यवेक्षण का प्रयोग किया जाएगा, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों एवं छोटे कस्बों में छोटे–छोटे समूहों के मध्य जाकर प्रश्नावलियों व साक्षात्कार के माध्यम से सूचनाओं को प्राप्त करके, उनकी व्याख्या एवं विश्लेषण किया जाएगा।

निष्कर्ष

सांम्प्रदायिकता, समकालीन बहुलवादी भारतीय समाज के सामने मौजूद एक बड़ी समस्या है। ये भारतीय संविधान के बुनियादी मूल्यों को ही चुनौती देती है। भारत ने स्वतंत्रता के बाद एक धर्म निरपेक्ष प्रजातांत्रिक व्यवस्था बनाने का निश्चय किया था। साम्प्रदायिक चेतना के चलते ही हमारा समाज टूटता है जिसके चलते अलग–अलग संप्रदाय के लोगों के बीच में तनाव का माहौल उत्पन्न होता है। साम्प्रदायिक चेतना के चलते, किसी खास स्तर पर यह साम्प्रदायिक हिंसा का रूप ले लेती है। जो कि हमारे आंतरिक समाज के लिए बड़ा खतरा है। भारतीय समाज में सांप्रदायिकता की इस समस्या, इसकी अभिव्यक्ति एवं सांप्रदायिक हिंसा का गम्भीरता पूर्वक एक सशक्त समाधान ढूंढना पड़ेगा अन्यथा हमारे देश के आजादी के आंदोलन के विरासत की वह आधार शिला ही ढह जाएगी, जिस पर संविधान निर्माताओं ने एक उदार, धर्म निरपेक्ष, प्रगतिशील, लोकतांत्रिक एवं समाजवादी मुल्क बनाने का सपना देखा था। वर्तमान समय में साम्प्रदायिकता की समस्या के चलते ही समाज में अलग–अलग सम्प्रदायों के बीच भय, अविश्वास, पूर्वाग्रह जैसी समस्यायें देखने को मिलती है जो कि हमारी साझी विरासत, धार्मिक सहिष्णुता एवं धर्म निरपेक्षता के लिए भी एक खतरा है।

अभी तक साम्प्रदायिकता के ऐतिहासक पक्ष पर बात की गयी है और दंगों के होने और उसके भौगोलिक प्रसार पर बात की गयी है। यह चर्चा समस्या को या तो

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखती है या उसकी तात्कालिकता में। जबकि लोगों की चेतना से साम्प्रदायिकता की समस्या उपजती है।

यह देखने की कोशिशें नहीं की गयी है कि एक धर्म के अनुयायी दूसरे धर्म के अनुयायियों को अपना स्वाभाविक शत्रु क्यों मान लेते हैं ? चेतना के स्तर पर लोग साम्प्रदायिक क्यों हो जाते हैं और यहचेतना ग्रामीण समाजों में किस प्रकारप्रसार पाती है? जो समुदाय साथ रहते दिखते हैं, उनके बीच में साम्प्रदायिकतनाव कैसे बढ़ता है और एक समय के बाद किस प्रकार व्यापक रूप धारण कर लेता है? जिसे दंगा कहा जाता है, उसकी आधार–सामग्री का निर्माण किस प्रकार होता है? इस प्रक्रिया में राजनीति क्या भूमिका निभाती है?

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आस्टिन, ग्रेनविल, द इण्डियन कांस्टीट्यूशनः कार्नरस्टोन ऑव अ नेशन, 1966, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बाम्बे।*
2. *एंथोनी जे परेल , संपा. गाँधीः हिंद स्वराज एंड अदर राइटिंग्स, 2009, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेसः नयी दिल्ली।*
3. *बसु, आचार्य डा0 दुर्गा दास, भारत का संविधान–एक परिचय, आठवां संस्करण, 2002 प्रकाशक बाधवा एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली।*
4. *चन्द्र विपिन, साम्प्रदायिकताः एक परिचय, 2004 अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0 लि0) नई दिल्ली।*
5. *नेहरू, जवाहरलाल ,डिस्कवरी ऑव इण्डिया, 1986, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली,*
6. *राय, वी0एन0, साम्प्रदायिक दंगे एवं भारतीय पुलिस, 2000,राधाकृष्ण प्रकाशन , दिल्ली।*
7. *साम्प्रदायिक समस्याः कानपुर दंगा जाँच समिति की रिपोर्ट, 2008, अनुवाद– दिवाकर, नेशनल बुक ट्रस्टः नयी दिल्ली, ।*
8. *ज्ञानेन्द्र पाण्डेय ओमनीबस, 2008, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली में संग्रहीत।*
9. *चन्द्र विपिन, (2000) आधुनिक भारत में विचारधारा और राजनीति, अनामिका पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0लिमिटेड) नई दिल्ली।*
10. *हबीब इरफान, (2005) इतिहास और विचारधारा, ग्रन्थ शिल्पी इण्डिया, (प्रा0लिमिटेड) नई दिल्ली।*
11. *इंजीनियर असगर अली, (2007) भारत में साम्प्रदायिकता इतिहास और अनुभव, पुनर्मुद्रण : प्रकाशक इतिहासबोध प्रकाशन, इलाहाबाद।*
12. *इंजीनियर असगर अली, (2012) धर्म और साम्प्रदायिकता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली*
13. *पटनायक प्रभात, (1995) हमारे दौर का फांसीवाद. साम्प्रदायिकता और संस्कृति के सवाल में पेज 43, सहमत, नई दिल्ली।*
14. *पणिक्कर के.एन., (2009) आज का सम्प्रदायवाद हस्तक्षेप की सार्थकता, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली।*
15. *Bayly, C.A. (1985): "The Pre-Histroy of 'Communalism'? Religious Conflict in India, 1700-1860" Modern Asian Studies.*
16. *Bhargava, Rajeev (1998): Secularism and Its Critics (New Delhi: Oxford University Press).*
17. *Freitag, Sandria (1990): Collective Action and Comunity: Public Arenas and the Emergence of Communalism in North India (Delhi: Oxford University Press).*
18. *Katju, Justice Markandey PCI Report 8 February 2013, on Faizabad Communal Riot was preplanned.*
19. *Pannikar, KN (1991) : Communalism in India : History, Politics and Culture (New Delhi : Manohar).*
20. *PUCL, August 2003, Manipulating peoples minds*
21. *PUCL, March 2004, Cultural Policing by Bajrang Dal and the Rajasthan Police.*
22. *Sahay, Anand K. The Republic Besmirched 6 December 1992, Safdar Hashmi Memorial trust, New Delhi.*
23. *Saxena, N.C. Communal Riots in Post Independence India (1984) Engineer, Asghar Ali, ed. (1984a): Communal Riots in Post-Independent India (Delhi : Sangam Publications).*
24. *Srivastava Kavita, PUCL, April 2003, Communalising Rajasthan.*

पाद टिप्पणी

1. *सांप्रदायिक समस्याः मार्च 1931 के कानपुर दंगों की जांच के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस(कराची अधिवेशन) द्वारा नियुक्त समिति की रिपोर्ट (2008), अनुवाद– दिवाकर, नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली.*
2. *महात्मा गांधी (2008), मेरे सपनों का भारत, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबादः 260*
3. *http://thewirehindi.com/20386/cow-slaughter-up-gonda-moharram/*